

विचार बिन्दु

“जीवन के अच्छे दिनों में कभी भी उन लोगों को ना भूले जो जीवन के बुरे दिनों में आपके साथ थे।”- अरविन्द कटोच

केवल पुलिस सब इंस्पेक्टर्स की भर्ती निरस्त करने मात्र से क्या होगा, रोग की जड़ों का इलाज भी जरूरी है?

पुलिस सबइंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा 2021 के जरिये 859 पीएसआई भर्ती होने थे।परीक्षा के तुरंत बाद से ही यह आरोप लगातार लगे कि परीक्षा के पेपर लीक हुए।पेपर ही लीक नहीं हुए,बहुत से आवेदकों की जगह दूसरे व्यक्तिय परीक्षा में बैठे।आवेदन के साथ दस्तावेज भी नकली-फेक लगाए।ऐसे डमी परीक्षार्थी पास भी हुए और पीएसआई बनने के लिए चयनित भी हुए। पीएसआई भर्ती परीक्षा के लिए 8 लाख के करीब युवकों में आवेदन किया और 3 लाख 80 हजार के करीब आवेदकों में परीक्षा दी थी। यह आंकड़ा बेरोजगारी की भयावह स्थिति की ओर इशारा करता है। ज्यादा धरना-प्रदर्शन होने पर, उस समय विपक्ष में और अब सत्ता पक्ष के वरिष्ठ राजनेताओं द्वारा इस परीक्षा की सुचिता पर बार बार प्रश्न उठाने पर और कुछ सबूत सम्बंधित अधिकारियों के सामने रखने पर भी पूर्ववर्ती सरकार में कोई जांच नही करवाई। चयनितों को पोस्टिंग आईर्डस भी दे दिए।

वर्तमान सरकार ने चुनाव के समय इस प्रकार के सारे भर्ती फर्जीवाड़े को एक प्रमुख चुनावी मुद्दा बनाया था। इस कारण सरकार को गहन जांच के लिए सारा प्रकरण पुलिस की शाखा एसओजी (स्पेशल ओप्रेसन टाुप) को सौंपना पड़ा।अभी तक इस मामले में 53 प्रशिक्षु सब इन्स्पेक्टर्स के साथ साथ इस फर्जीवाड़े में सहायक 1०3 दूसरे व्यक्ति गिरफ्तार हो चुके।

अभी तक कि जांच से इतना साफ हो चुका है कि पीएसआई परीक्षा में बड़े पैमाने पर पेपर लीक हुए, चयनित व्यक्तियों के लिए परीक्षा डमी लोगों ने दी। एसओजी में जो हेल्पलाइन जारी की थी उस पर हजारों की संख्या में शिकायतें,अपत्तियां आई है। इस भर्ती में फर्जीवाड़े को लेकर वर्तमान सरकार के एक बड़े राजनेता ने शुरू से विरोध किया।उनका ही कथन सही मानें तो उन्होंने बहुत से अहम सबूत सरकार व एसओजी को दिए है।

अब इस भर्ती से हुई नियुक्तियों का बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (रालोप-) विरोध कर रही है जिसने इस मुद्दे पर विधान सभा के घेराव की भी चेतावनी दी है। इस मुद्दे का एक अन्य पक्ष भी है। चयनित पीएसआई लोगों से सहानुभूति रखने वाले उनके परिजन व मित्र लोग भी धरना प्रदर्शन कर सरकार से मांग कर रहे हैं कि जो चुने गए हैं उनमें बहुत से, बिना पेपर लीक का सहारा लिए, अपनी योग्यता के आधार पर चुने गए हैं। इन लोगों में ऐसे बहुत से लोग हैं जो पहले से विभिन्न सरकारी विभागों में सेवारत रहे हैं। ऐसे निर्दोष लोगों की नोकरियों पर कोई खतरा नहीं होना चाहिए। अब यक्ष प्रश्न है कि चयनितों में से यह कैसे छंटीनी हो कि किन लोगों ने पेपर लीक का फायदा उठाया और किन लोगों ने नहीं?

इसी बात की जांच लगातार एसओजी कर रही है। ऐसा माना जा रहा है कि एसओजी ने जांच के आधार पर यह माना है कि इस परीक्षा में पड़े पैमाने पर धांधली हुई थी और इस परीक्षा को निरस्त कर पुन: परीक्षा की सिफारिश की है।इस पर मंत्रिमंडल का निर्णय शेष है।प्रकरण माननीय उच्च न्यायालय में विचाराधीन है।सरकार का जो भी निर्णय होगा उसका परीक्षण उच्च न्यायालय में होना ही है। लेकिन बात केवल पुलिस सब इंस्पेक्टर्स की भर्ती की नहीं है,यह बीमारी बड़ी है।सत्ताधारी लोग की सरकारी कर्मचारियों की नियुक्तियों व पोस्टिंग में सदा से ही चलती रही है। यह कुछ जनहित में होता है और कुछ स्व हित में होता है। 1998 से पहले भी यह बीमारी थी किंतु बड़े रूप में नहीं फैली थी।सत्ता के नजदीक के लोगों की कुछ सिफारिशें मानी जाती थी और कुछ प्रशासन के हित में नहीं मानी जाती थी।

1998 में डिजायर नाम की एक बीमारी ने व्यापक रूप धारण कर लिया। समय के साथ बीमारी

अभी तक कि जांच से इतना साफ हो चुका है कि पीएसआई परीक्षा में बड़े पैमाने पर पेपर लीक हुए, चयनित व्यक्तियों के लिए परीक्षा डमी लोगों ने दी। एसओजी में जो हेल्पलाइन जारी की थी उस पर हजारों की संख्या में शिकायतें,अपत्तियां आई है। इस भर्ती में फर्जीवाड़े को लेकर वर्तमान सरकार के एक बड़े राजनेता ने शुरू से विरोध किया। उनका ही कथन सही मानें तो उन्होंने बहुत से अहम सबूत सरकार व एसओजी को दिए हैं। अब इस भर्ती से हुई नियुक्तियों का बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी विरोध कर रही है जिसने इस मुद्दे पर विधानसभा के घेराव की भी चेतावनी दी है। इस मुद्दे का एक अन्य पक्ष भी है। चयनित पीएसआई लोगों से सहानुभूति रखने वाले उनके परिजन व मित्र लोग भी धरना प्रदर्शन कर सरकार से मांग कर रहे हैं कि जो चुने गए हैं उनमें बहुत से, बिना पेपर लीक का सहारा लिए, अपनी योग्यता के आधार पर चुने गए हैं।

कई लोग सरकारी नौकरियों में नियुक्ति पा गए और सही अभ्यर्थियों को उनकी सज्जनता का डंड मिल गया। पीएसआई भर्ती के अतिरिक्त शारीरिक शिक्षक भर्ती,व्याख्याता भर्ती परीक्षा 2०22,वरिष्ठ अध्यापक भर्ती परीक्षा 2०22,लेवल 1 अध्यापक भर्ती परीक्षा 2०18, प्रयोगशाला सहायक परीक्षा2०18-19 तथा शिक्षा विभाग की अन्य भर्तियों में व्यापक गड़बड़ियों के आरोप लगे। अब आरोप तो सर्वविदित है। क्या राजनीतिक दलों के बयानवीर नेताओं में बयान भी खूब जारी किए किंतु क्या 2,4 भर्ती परीक्षाएं निरस्त हो जाएं या गहन जांच के बाद 1००-5० को नौकरी से बर्खास्त हो जाए तो इस से रोग का अच्छा उपचार हो जाएगा? क्या रोग जड़ों से खत्म हो जाएगा या कम से कम लंबे अरसे तक रिपीट तो नहीं होगा? नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब तक नौकरियों के लिए परीक्षाएं,साक्षात्कार लेने वाली संस्थाओं में योग्य,निष्ठावान अध्येक्ष,सदस्य व वरिष्ठ अधिकारी नहीं लगाएंगे तब तक एक बार जो बीमारी फैली है उसे जड़ों से खत्म करना मुश्किल होगा। सरकार के पास अधिकारियों का कड़ा बेड़ा होता है और उसमें योग्य निष्ठावान अधिकारी भी बहुत है। केवल ध्यान से,निष्पक्षता से चयन करना होगा,सिफारिशें को दर किनार करना होगा। जहां तक अध्येक्ष,सदस्यों की नियुक्तियों का प्रश्न है,उसके लिए सर्वप्रथम एक योग्य अधिकारियों,शिक्षाविदों आदि का सच पैनल गठित किया जाए।सच पैनल,प्रारंभिक तौर पर 4०,5० व्यक्तियों की छंटीनी करे।सरकार द्वारा इन के नाम सार्वजनिक किए जाए। जनता का फीडबैक लिया जाए।सर्वथा उचित पर गये व्यक्तियों में से 1०,2० नाम शॉर्टलिस्ट कर मंत्रिमंडल के समुच्च चयन करने के लिए रखे जाएं। अंतिम निर्णय तो चुनी हुई सरकार को ही करना है किंतु स्वच्छ चयन की दिशा में यह प्रयास हो सकता है।सरकार के पास सलाहकारों की कमी नहीं,और बेहतर सुझाव लें और पूर्णत: आर्बिटररी चयन के स्थान पर कोई युक्तियुक्त ,काफी हद तक पारदर्शी,उचित मानदंडों पर आधारित प्रक्रिया अपनाई जाए जिस से जनता को लगे कि चयन योग्यता के आधार पर होता है और पूर्णत: भाई भतीजावाद के अनुसार नहीं। निर्णय तो सरकार को करना है। अनुभव यह बताता है कि कोई भी सरकार अपने स्वीच्छिक अधिकारों पर अंकुश नहीं लगाती बल्कि अपनों को उपकृत करने में उनका उपयोग,दुरुपयोग करती हैं। आरोपों का क्या,पहले यह सत्ताधीश लगाते अब पहले वाले लगाते रहेंगे।जनता धरना प्रदर्शन करती रहेगा--सत्ता वालों के पास पुलिस है दुरुपयोग करने के लिए।

(महावीर सिंह, पूर्व आईएसएस)

राशिफल

शनिवार 31 मई, 2025

ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, शनिवार, विक्रमसम्वत् 2०82, पुष्य नक्षत्र, रात्रि 9.०7 तक, वृद्धि योग दिन 1०.43 तक, बवकरा प्रात: 8.49 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कर्क,

मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरु-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में संचार करेगा।

आज रवियोग रात्रि 9.०7 से आरम्भ होगा। गृति पंचमी, महादेव विवाह है महाप्रात्र योग दिन 11.58 से सायं 5.36 तक है। आज शुक्र अश्विनी मेष में दिन 11.33 पर प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7.19 से 9.०1 तक, चट 12.24 से 2.०6 तक, लाभ-अमृत 2.०6 से 5.29 तक

राहुकाल: 9.०0 से 1०.3० तक, सूर्योदय 5.37 सूर्यास्त 7.11

मेष
घर-परिवार में सुख सुविधाएँ बढेंगी। परिवार में धार्मिक मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संपन्न है। आर्थिक मामले में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों-रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशासन प्राप्त होंगे। अटक हुए कार्य बने लगेगें। धार्मिक स्थान की यात्रा संपन्न है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनेने लगेगें। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बरते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उज्जित सफलता मिलेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएँ बढेंगी।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उन्मत्त जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

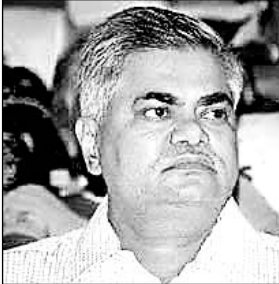
सिंह
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनंगल कार्यों में समय खर्चा होगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है

कुंभ
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। आज अटके हुए कार्य बने लगेगें। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
कन्या-आर्थिक वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल उंचा रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संपन्न है।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर : सुशासन व सांस्कृतिक पुनर्निर्माण को समर्पित साधनामय जीवन



राजेश्वर सिंह

मराठा महासंघ के अंतर्गत इंदौर राज्य की तपस्विनी एवं तेजस्विनी शासिका अहिल्याबाई होल्कर अपने शौर्य, साहस, बुद्धि, कौशल, न्यायप्रियता, लोक कल्याणकारी प्रशासन, शिव भक्ति, त्याग और तपस्या से परिपूर्ण आध्यात्मिक जीवन तथा घ्वस्तुत धार्मिक स्थलों के पुनरुद्धार एवं नवनिर्माण की वजह से अपने जीवन काल में ही किंवदंती का रूप धारण कर चुकी थीं। उनकी उदारता, दयालुता ,परदु:ख कातरता प्रशासनिक कुशलता व अतुलनीय धर्म निष्ठा के असंख्य किस्से आज भी मालवा व निमाड़ के क्षेत्र में प्रचलित हैं और जन सामान्य को व्यक्तिगत दुखों का साहसपूर्वक सामना करने तथा जीवन को परिहत व लोकाहित के लिए समर्पित करने की प्रेरणा देते हैं।

अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई को महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर (अब अहिल्या नगर) जिले के टााम चौड़ी में हुआ था। उनके पिता गांव के पाटिल थे। वह बाल्यकाल से ही कुशाठा बुद्धि, साहसी व धर्म परायण थीं। इंदौर के सुबेदार मल्हार राव होल्कर के सैन्य

अभियान पर जाते समय चौड़ी गांव के शिव मंदिर में बालिका अहिल्याबाई से उनकी आकस्मिक मुलाकात हुई और उनके नैसर्गिक तेज और ओज से प्रभावित होकर मल्हार राव ने उन्हें अपनी पुत्रवधू बनाने का निर्णय लिया।

इस प्रकार 1733 ईस्वी में मात्र 8 वर्ष की आयु में अहिल्याबाई मल्हार राव होल्कर के पुत्र खंडेराव की पत्नी बनकर मालवा में आ गईं। वहां उन्हें अपनी नैसर्गिक प्रतिभा के विकास के लिए अनुकूल वातावरण मिला तथा मल्हार राव होल्कर की सुनेहिल छत्र छाया में न केवल उन्होंने शास्त्रों के पठन-पाठन में प्रवीणता अर्जित की वरन वे युद्ध कौशल एवं राजकीय प्रशासन की बारीकियों में भी निष्णात हो गईं। अहिल्याबाई का व्यक्तिगत जीवन असहनीय दु:ख, व्यथा, वेदना और संताप से भर हुआ था। 24 मार्च 1754 को एक युद्ध के दौरान उनके पति खंडेराव का दु:खद निधन हो गया।कुछ समय बाद 20 मई 1766 को उनके सुभर मल्हार राव होल्कर नहीं रहे। 5 अप्रैल 1767 को उनके एकमात्र पुत्र मालेराव भी चल बसे। इसके बाद होल्कर राज्य की बागडोर औपचारिक रूप से अहिल्याबाई के हाथ में आई जिसका कुशलता व तत्परतापूर्वक निर्वहन उन्होंने अपने सुयोग्य व शूवीर सेनापति तुकाजी राव होल्कर की सहायता से किया। 13 अगस्त 1795 को 7० वर्ष की आयु में महेश्वर कस्बे में अपनी मृत्यु पर्यंत उन्होंने इस महनीय उत्तरदायित्व का वहन किया तथा व्यक्तिगत जीवन की शुचिता, राज कार्य की प्रबंधपटुता, निर्वल व असहाय के प्रति दया भाव, युद्ध क्षेत्र की वीरता व वैयक्तिक कोष

से तीर्थ स्थलों के पुनर्निर्माण के आध्यात्मिक उपक्रम से अभूतपूर्व यश, प्रतिष्ठा व लोकप्रियता का सार्वकालिक मानदंड स्थापित कर दिया। उनका व्यक्तिगत व प्रशासनिक जीवन वैराग्य ,आध्यात्मिक साधना, निष्काम भाव से राज कार्य संपादन व सर्वतोमुखी लोकमंगल के प्रति पूर्ण समर्पण जैसे उच्चतम जीवन मूल्यों को समर्पित था। वे अप्रतिम शिव भक्त थीं और नित्य नैमित्तिक शिवपूजन के उपरांत ही अन्न-जल ठाहण करती थीं।संपूर्ण राज्य उन्होंने अपने अराधा देव की समर्पित कर खा था। राजाज्ञाओं पर हस्ताक्षर करते समय वे अपना नाम न लिखकर श्री शंकर ही लिखती थीं। तब से लेकर भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति तक इंदौर राज्य की समस्त राजाज्ञाएं श्री शंकर की आज्ञा से ही पालनार्थ निर्गत होती थीं। उनका रहन-सहन अत्यंत सादगीपूर्ण था। वे श्वेत वस्त्र धारण करती थीं तथा आभूषण व अलंकार इत्यादि का उपयोग नहीं करती थी। उनकी दिनचर्या पूर्वाह्न में धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रियाकलापों में व अपराह्न में राजकीय कर्तव्यों के निर्वहन व निष्पादन में व्यतीत होती थी। अहिल्याबाई होल्कर ने जब राज्य का शासन सूत्र ठाहण किया तो राज्य में चोर ,डाकुओं का आतंक व्याप्त था जिससे जनसाधारण अत्यंत त्रस्त था। अहिल्याबाई ने यह घोषणा की कि जो वीर पुरुष इन उपद्रवियों को काट्ट में ले आएगा ,उससे मैं अपनी पुत्री मुक्ताबाई का विवाह कर दूंगी। यशवंत राव फडसे नामक एक साहसी युवक ने यह बीड़ा उठाया और थोड़े दिनों में ही उन्होंने दस्यु समस्या का उन्मूलन कर राज्य में शांति

स्थापित कर दी। इसके उपरांत यशवंत राव व मुक्ताबाई का विवाह समारोहपूर्वक संपन्न हुआ। राज्य में शांति व्यवस्था स्थापित होते ही व्यापार, वाणिज्य व कला – कौशल में अभिवृद्धि हुई तथा महेश्वर ,जो अहिल्याबाई का मुख्यालय था, वस्त्र व्यवसाय का एक प्रमुख केंद्र बन गया। महेश्वर की यह स्थिति आज तक बदसतूर बरकरार है। उन्होंने प्रशासन को सुव्यवस्थित कर राज्य को जिला एवं तहसीलों में विभक्त किया ,हर स्तर पर न्यायालय स्थापित किए व विवादों को स्थानीय स्तर पर शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिए पंचायतों की स्थापना की। उनके प्रजानन कभी भी फरियाद लेकर सीधे उनके पास भी आ सकते थे। उन्होंने कारोारण की भी अतुयंत सरल पद्धत अपनाई जिसके अंतर्गत कर की दरें अन्य राज्यों की तुलना में अत्यंत कम होती थी ,फलत: कर की वसूली ज्यादा होती थी। उन्होंने विधवा महिलाओं की मृत पति का उत्तराधिकार प्रदान किया तथा शिक्षा एवं विशेष कर महिला शिक्षा की उन्नित के लिए विशेष प्रयास किए। उनकी न्यायप्रियता की ख्याति व प्रतिष्ठा का यह आलम था कि एक बार इंदौर व ग्वालियर राज्य के मध्य स्थित भूमि के विवाद के हल के लिए उन्हें ही न्यायाधीश मनोनीत किया गया जबकि वे स्वयं विवाद में एक पक्षकार थीं। उन्होंने उक्त विवाद का निर्णय भी अत्यंत तटस्थता व निष्पक्षतापूर्वक किया जिससे दोनों ही पक्ष सहमत व संतुष्ट हुए।

संपूर्ण भारतवर्ष में आक्रांताओं द्वारा व्धस्त किए गए धर्मस्थलों का पुनर्निर्माण, पुरातन देवालयों का जीर्णोद्धार, लगभग सभी पवित्र नदियों व सरोवरों पर घाट तथा धर्मशालाएं एवं स्थान-स्थान पर कुएं एवं बावडियां का निर्माण इस धर्मपरायण शासिका की चिरस्थायी देन है, जिसके लिए धर्म प्रेमी जनता उनकी हमेशा श्रद्धा व कृतज्ञ रहेगी। उन्होंने सोमनाथ तथा काशी विश्वनाथ के खंडित देवालयों का पुनर्निर्माण किया व उनमें देव विठाह की पुनर्प्रतिष्ठा की। इस संबंध में यह उल्लेखनीय व स्मरणीय है कि यह सब कार्य उन्होंने इंदौर के राजकोष से वहन न कर शासक को जीवन निर्वाह हेतु प्राप्त होने वाली वैयक्तिक धनराशि से से किया था।

अहिल्याबाई होल्कर द्वारा शासित इंदौर कोई बहुत बड़ी रियासत नहीं थी, किंतु अपनी विलक्षण प्रतिभा, पावन चरित्र, अदम्य साहस, अनुपम त्याग, दु:साध्य संयम, असीम उदारता, अद्भुत लोक निष्ठा व अतुलनीय धर्मपरायणता की वजह से उन्होंने अपने जैवा काल में ही अपरिमित व अकल्पनीय ख्याति, प्रतिष्ठा, श्रद्धा व सम्मान अर्जित कर लिया। इतिहास में संभवत: वह एकमात्र रानी हैं जो अपने व्यक्तिव व कृतित्व की वजह से लोक- स्मृति में लोकमाता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। अतुलनीय धर्मपरायणता की वजह से उन्हें अपने जीवनकाल में ही अपरिमित व अकल्पनीय ख्याति, प्रतिष्ठा, श्रद्धा व सम्मान अर्जित कर लिया। इतिहास में संभवत: वह एकमात्र रानी हैं जो अपने व्यक्तिव व कृतित्व की वजह से लोक स्मृति में लोकमाता के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

—राजेश्वर सिंह

आईएस (सेवानिवृत्त)

एम.एस.पी. घोषणा सकारात्मक पहल तो चाकचौबंद खरीद व्यवस्था भी जरूरी



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

केन्द्र सरकार द्वारा खरीफ फसलों की न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा खरीफ की बुवाई से पहले ही करने को किसानों के हित में सकारात्मक पहल के रूप में देखा जाना चाहिए। इसमें कोई दो राय नहीं कि नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा एक तो समय पूर्व समर्थन मूल्यों की घोषणा की जा रही है वहीं दूसरी ओर पवित्र्य की रणनीति के तहत आवश्यकतानुसार उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने की दिशा में भी कदम बढ़ाये जा रहे हैं। सरकार द्वारा श्री अन्न को जहां अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने का सफल प्रयास किया गया है।

वहीं देश को दलहन और तिलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं। 2०27 तक दलहन के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य के साथ सरकार आगे बढ़ रही है तो तिलहन के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रयास किये जा रहे हैं। सरकार की गंभीरता को

इसी से समझा जा सकता है कि आगामी खरीफ के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्यों में रामतिल के भावों में सर्वाधिक 82० रु. की बढ़ोतरी करते हुए 9537 रु. प्रति किंटल पूर्णसप्ली घोषित की गई है। इसी तरह से तिल की एमएसपी में 579 रु., सोयाबीन में 436 रु., सूरजमुखी में 441 रु. और मूंगफली की एमएसपी में 48० रु. की बढ़ोतरी की गई है। ठीक इसी तरह से उड़द में 4०० रु. तो मूंग की एमएसपी में 86 रु. और अरहर की एमएसपी में 45० रु. की बढ़ोतरी की गई है। इसी तरह से बाजरा, रागी, ज्वार, कपास, धान आदि अन्य खरीफ फसलों की एमएसपी दरों में बढ़ोतरी की गई है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि जहां तक एमएसपी दरों की घोषणा की बात है सरकार की इच्छा शक्ति पर किसी तरह का संदेह नहीं किया जा सकता है। मोदी सरकार के 2०13-14 से 2025-26 तक के कार्यकाल की एमएसपी दरों में बढ़ोतरी निश्चित रुप से सकारात्मक दिशा में बढ़ता कदम माना जा सकता है। 2०13-14 की तुलना में 226 प्रतिशत की बढ़ोतरी रागी के समर्थन मूल्य में की गई है। बाजरा में 122 प्रतिशत तो ज्वार की एमएसपी में 147 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो चुकी है। दलहन और तिलहन की खरीफ फसलों में भी 82 प्रतिशत से रामतिल में 172 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। सरकार का यह भी दावा है कि एमएसपी घोषणा करने से पहले सरकार ने फसलों की लागत के सभी पहलुओं को ध्यान में रखा है और लागत से कई अधिक एमएसपी दर जारी की गई हैं।

दो पार्थीव देह मेडिकल कॉलेज को सौंपी

बीकानेर, (निः)। सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज बीकानेर के एनाटॉमी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर खत्री ने शुक्रवार को अपने पुत्र दीपक खत्री के निधन पर उनकी पार्थीव देह मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभाग में सुपुर्द की। इस अवसर पर सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज की अतिरिक्त प्राचार्य डॉ. रेखा आचार्य पार्थीव देह पर पुण्यांजलि अर्पित कर परिजनों को ढांडस बंधाया और कहा कि पूर्व विभागाध्यक्ष द्वारा दु:ख की इस घड़ी में देहदान का निर्णय सर्वसमाज

को प्रेरित करेगा जिससे सर्व समाज को कुशल चिकित्सक प्राप्त होंगे। इस दौरान शरीर रचना विभाग से डॉ. राकेश मणि, डॉ. कविता पाहुजा, डॉ. जसकरण सहित अन्य कार्कोयों एवं परिजनों आदि ने पार्थीव देह को श्रद्धासन्मन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। समाजसेवी देवानी का मिशन, पार्थीव शरीर मेडिकल कॉलेज को दान किया :- वहीं शहर के प्रतिष्ठित समाजसेवी, व्यापारी और देहदान आंदोलन के प्रेरक पवन देवानी का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। अपने

जीवनभर देहदान और अंगदान को समर्पित रहे देवानी ने मृत्यु उपरति भी अपना पार्थीव शरीर मेडिकल शिक्षा के लिए मेडिकल कॉलेज को दान कर समाज के लिए अंतिम संदेश छोड़ पाए। देहदान के इस पुण्य अवसर पर सिंधी समाज के कई प्रमुख व्यक्ति उपस्थित रहे। मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. गुंजन सोनी ने भी इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वयं देहदान प्रक्रिया में भाग लिया और इसे एक सामाजिक संदेश करार दिया। देह क्षण न केवल पवन देवानी के जीवन

मूल्यों का प्रतीक था, बल्कि समाज में देहदान और अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने वाला भी बना। देवानी का जन्म 26 मार्च 1944 को वर्तमान पाकिस्तान में हुआ था। भारत-पाक विभाजन के दौरान उनका परिवार सब कुछ छोड़कर भारत आ गया। महज 7 वर्ष की आयु में माता को खोज के बाद, उन्होंने चौथी कक्षा तक ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन ज्ञान, सामाजिक जागरूकता और जीवन मूल्य उन्हें विरासत में मिले। उन्होंने न केवल व्यवसाय में

को वर्तमान पाकिस्तान में हुआ था। भारत-पाक विभाजन के दौरान उनका परिवार सब कुछ छोड़कर भारत आ गया। महज 7 वर्ष की आयु में माता को खोज के बाद, उन्होंने चौथी कक्षा तक ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन ज्ञान, सामाजिक जागरूकता और जीवन मूल्य उन्हें विरासत में मिले। उन्होंने न केवल व्यवसाय में देहदान और अंगदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने वाला भी बना। देवानी का जन्म 26 मार्च 1944 को वर्तमान पाकिस्तान में हुआ था। भारत-पाक विभाजन के दौरान उनका परिवार सब कुछ छोड़कर भारत आ गया। महज 7 वर्ष की आयु में माता को खोज के बाद, उन्होंने चौथी कक्षा तक ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त की, लेकिन ज्ञान, सामाजिक जागरूकता और जीवन मूल्य उन्हें विरासत में मिले। उन्होंने न केवल व्यवसाय में

पहचान बनाई, बल्कि मानवता, सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय योगदान दिया। देवानी के पुत्र महेश देवानी ने बताया कि उनके पिताजी कहते थे, देहदान से मेडिकल छात्रों को मानव शरीर को समझने में मदद मिलती है, और यह एक सच्चा सामाजिक योगदान है। महेश देवानी ने बताया कि व्षों से उनके पिता अपनी जेब में देहदान कार्ड लेकर चलते थे और लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करते रहे। उनकी यह प्रतिबद्धता अंत तक बनी रही।